



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	23.05.2020	04	02-06

नुकसान से बचाव की सलाह • एचएयू के कौट विज्ञान विभाग ने टिड्डी दल से सुरक्षा के बारे दिए सतर्कतापूर्वक सुझाव

टिड्डियों का झुंड दिखे तो ढोल बजाकर फसलों पर बैठने से रोकें

भास्कर न्यूज़ | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विवि के कुलपति प्रो. केपी सिंह के कुशल व योग्य मार्गदर्शन में कीट विज्ञान विभाग ने किसानों को टिड्डी दल से सुरक्षा संबंधित महत्वपूर्ण तथा इनके पंख निकल आते हैं। अवस्था में ये टिड्डियां सामान्यता 6 मौजूद वनस्पतियों को नष्ट कर देती हैं। शिशु टिड्डियों के पंख नहीं होते हैं। अतः ये उड़ नहीं सकती। व्यस्क अपरिपक्व टिड्डियां गुलाबी रंग की दल या झुंड बनाकर उड़ नहीं पाती। अतः ये दल या झुंड बनाकर उड़ने में सक्षम होती हैं। इस अवस्था में सामान्यता 4 सताह तक रही है। झुंड में टिड्डियां हजारों से लेकर लाखों की संख्या तक हो सकती हैं। ये झुंड दिन के समय 12 से 16 किलोमीटर प्रति घण्टे की रफ्तार से 150 किलोमीटर तक की दूरी तय कर सकते हैं। ये झुंड रात के समय विभिन्न वनस्पतियों पर बैठ जाते हैं तथा अधिक क्षति पहुंचते हैं। इन टिड्डियों का रंग जब गहरा भूरा या पीला होने लगे तो ये परिपक्व व्यस्क बन जाती हैं जो आपडे देने में सक्षम होती है। अपडे देने की स्थिति आने पर ये टिड्डियां 2-3 दिनों तक उड़ नहीं पाती। अतः ये दल या झुंड बनाकर इन्हें फसलों में क्षति की दृष्टि से इन टिड्डियों की संख्या 10000 टिड्डियां प्रति हेक्टेयर या 5-6 टिड्डियां प्रति झाड़ी के अंकी हैं। टिड्डियों की संख्या इससे अधिक होने पर कीटनाशक दवाइयों के छिड़काव की जरूरत पड़ती है। हारे सीमावर्ती राज्य में इन टिड्डियों के झुंड पाए गए हैं तथा इनके नियंत्रण का कार्य लगातार किया जा रहा है।

- इन बातों का रखें ध्याल**
- हमारे राज्य में टिड्डियों के झुंड के प्रवेश करने की संभावना कम है परन्तु सचेत रहकर आपसी सहयोग करें।
 - टिड्डियों के झुंड के दिखाई देने पर ढोल या डम बजाकर इन्हें फसलों पर बैठने से रोका जा सकता है।
 - टिड्डियों की फसल में उपस्थिति या आसपास के इलाकों में प्रवेश की जानकारी नजदीकी कृषि विज्ञान केन्द्र या कृषि विभाग अधिकारी या कौट विज्ञान विभाग, एचएयू हिसार को तुरन्त दी जाए।
 - रेतीले टिब्बों/इलाकों में आगर टिड्डियों के झुंड (पीले रंग की टिड्डियां) जमीन पर बैठी दिखाई दें तो उस स्थान को चिह्नित कर तुरन्त सूचित करें।
 - टिड्डियां अगर झुंड में न होकर अलग-2 हैं तथा इनकी संख्या कम है तो घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है।
 - अनावश्यक कीटनाशकों का प्रयोग फसलों पर न करें।
 - सोशल मीडिया पर टिड्डी दल के बारे में अनावश्यक खबरें न फलाएं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	23.05.2020	03	03-07

जागरूकता किसानों को सता रही टिड़डी दल की चिंता, एचएयू ने सुरक्षा के दिए सुझाव

पड़ोसी राज्यों से आसकती हैं टिड़डी, किसान रहें अलर्ट

जागरण संवाददाता, हिसार: किसानों को टिड़डी दल के आने की चिंता सता रही है। मगर किसान कुछ उपायों के माध्यम से इस समस्या से निजात पा सकते हैं। राजस्थान व पंजाब की सीमाओं से लगे होने के कारण हिसार और सिरस टिड़डी को लेकर अलर्ट पर हैं। यहां विभाग लगातार सूचना देने की बात कह रहे हैं। इस कड़ी में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कोट विज्ञान विभाग ने किसानों को टिड़डी दल से सुरक्षा संबंधित महत्वपूर्ण सुझाव दिए हैं। उन्होंने बताया कि टिड़डीयां छोटे एटिना वाली तथा प्रवासी आदत की होती हैं। टिड़डीयां अकेले या झुंड में रहती हैं, बहुभक्षी होती हैं। व्यस्क मादा टिड़डीयां नमी युक्त रेतीली मिट्टियों में 10-15 सेंटी मीटर की गहराई पर अपड़े देती हैं।

150 किलोमीटर तक की दूरी तय कर लेती हैं टिड़डीयां

झुंड में टिड़डीयां हजारों से लेकर लाखों की संख्या तक हो सकती हैं। यह झुंड दिन के समय 12 से 16 किलोमीटर प्रति घण्टे की रफ्तार से 150 किलोमीटर तक की दूरी तय कर सकते हैं। ये झुंड रात के समय विभिन्न वनस्पतियों पर बैठ जाते हैं तथा अधिक से अधिक क्षति पहुंचाते हैं। इन टिड़डीयों का रंग जब गहरा भूरा या पीला होने लगे तो यह परिपक्व व्यक्त बन जाती है जो आड़े देने में सक्षम होती है। इस स्थिति में ये टिड़डीयां 2-3 दिनों तक उड़ नहीं पाती।

टिड़डी दल के नियंत्रण के लिए सिफारिश किए गए कीटनाशक

कीटनाशक	मात्रा प्रति हेक्टेएर
• कलोरपायरिफास	20 फीसद ई.री 1.2 लीटर
• कलोरपायरिफास	50 फीसद ई.री .480 मिली लीटर
• मैलाथियान	50 फीसद ई.री .1.85 लीटर
• मैलाथियान	25 फीसद डब्ल्यू पी .3.7 किलो ग्राम
• डैल्टामैथरिन	2.8 फीसद ई.री .450 मिली लीटर
• फिपरोनिल	5 फीसद ई.री .125 मिली लीटर
• फिपरोनिल	2.8 फीसद ई.री .225 मिली लीटर
• लैम्डा-साइहेलोथ्रीन	5 फीसद ई.री .400 मिली लीटर
• लैम्डा-साइहेलोथ्रीन	10 फीसद डब्ल्यू पी .200 ग्राम

जिले को सतर्क रहने की आवश्यकता

फसलों में क्षति की दृष्टि से इन टिड़डीयों की संख्या 10 हजार टिड़डीयां प्रति हेक्टेएर या 5-6 टिड़डीयां प्रति झाड़ी आंकी गई हैं। टिड़डीयों की संख्या इससे अधिक होने पर कीटनाशक दवाइयों के छिकाव की जरूरत पड़ती है।

टिड़डीयां आने पर इन बातों का रखें ध्यान

- हमारे राज्य में टिड़डीयों के झुंड के प्रवेश करने की संभावना कम है परन्तु सर्वत रहकर आपसी सहयोग करें।
- टिड़डीयों के झुंड के दिखाई देने पर ढोल या झम बजाकर इर्हे फसलों पर बैठने से रोका जा सकता है।
- टिड़डीयों की फसल में उपस्थिति या आसपास के इलाकों में प्रवेश की जानकारी नजदीकी कृषि विज्ञान केन्द्र या कृषि विभाग अधिकारी या कीट विज्ञान विभाग, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार को तुरन्त दी जाए।
- रेतीले टिब्बों, इलाकों में अगर टिड़डीयों के झुंड (पीले रंग की टिड़डीयां) जमीन पर बैठी दिखाई दे तो उस स्थान को चिन्हित कर तुरन्त सूचित करें।
- टिड़डीया अगर झुंड में न होकर अलग-2 हैं तथा इनकी संख्या कम है तो घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	23.05.2020	03	06-08

हकूमी की किसानों को सलाह

ढोल या झूम बजाकर खेतों से भगाएं टिड्डी दल को

हिसार, 22 मई (निस)

टिड्डी दल आने का खतरा भांपते हुए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा किसानों के लिए बचाव के सुझाव जारी किए गए हैं।

विश्वविद्यालय का मानना है कि हरियाणा में टिड्डी दल का आना न के बराबर है, लेकिन ऐसा होने पर किसान ढोल व झूम बजाकर टिड्डी दल का फसलों पर बैठने से रोक सकते हैं। टिड्डी दल से

■ किसानों को
किया सतर्क

बचाव की जानकारी किसानों को देते हुए हकूमी के कीट विज्ञान विभाग ने बताया कि यूं तो हरियाणा में टिड्डी दल आने की संभावना बहुत ही कम है, लेकिन

हिसार व सिरसा के किसानों का सतर्क रहने की आवश्यकता है। विभाग ने

बताया कि टिड्डियां सामान्यता 6 सप्ताह तक रहती हैं तथा आसपास मौजूद वनस्पतियों को नष्ट कर देती हैं, जिसके लिए टिड्डियों की संख्या अधिक होने पर कीटनाशक का छिड़काव करें।

गेदिए सुझाव

- टिड्डियों की फसल में उपस्थिति या आसपास के इलाकों में प्रवेश की जानकारी कृषि विभाग को दें।
- रेतीले टिड्डों या इलाकों में अगर टिड्डियों के झांड जमीन पर दिखाई दें तो उस स्थान को तुरंत चिन्हित करें। अनावश्यक कीटनाशकों का प्रयोग फसलों पर न करें।
- जरुरी हो तो क्लोरपायरिफास, मेलाथियान, डेल्टामेरिन, किपरोनिल आदि कीटनाशकों का प्रयोग कृषि विशेषज्ञों की सलाह पर करें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	23.05.2020	03	05-06

फसल में टिड़िडयां मिलने पर तुरंत विभाग को दें सूचना : एचएयू

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के कीट विज्ञान विभाग के वैज्ञानिकों के अनुसार हमारे सीमावर्ती राज्य में टिड़िडयों के झुंड मिले हैं। इनके नियंत्रण का कार्य लगातार किया जा रहा है। सीमावर्ती राज्य होने कारण प्रदेश के किसानों (खासकर हिसार व सिरसा जिला के) को सतर्क रहने की आवश्यकता है। वैज्ञानिकों ने किसानों को टिड़ी दल से सुरक्षा संबंधित महत्वपूर्ण सुझाव दिए हैं।

किसान टिड़िडयों का झुंड दिखाई देने पर ढोल या ड्रम बजाकर इन्हें फसलों पर बैठने से रोकें। टिड़िडयों की फसल में उपस्थिति या आसपास के इलाकों में प्रवेश की जानकारी नजदीकी कृषि विज्ञान केन्द्र या कृषि विभाग अधिकारी या एचएयू को तुरंत दें। रेतीले टिब्बों/इलाकों में अगर टिड़िडयों के झुंड (पीले रंग की टिड़िडयां) जमीन पर बैठी दिखाई दे तो उस स्थान को चिन्हित कर तुरंत सूचित करें। अनावश्यक कीटनाशकों का प्रयोग नुसलों पर न करें।

टिड़ी दल के नियंत्रण के लिए इन कीटनाशकों का करें इस्तेमाल

- क्लोरपायरिफास 20 प्रतिशत ईसी, 1.2 लीटर प्रति हेक्टेयर
- क्लोरपायरिफास 50 प्रतिशत ईसी, 480 मिली लीटर प्रति हेक्टेयर
- मैलाथियान 50 प्रतिशत ईसी, 1.85 लीटर प्रति हेक्टेयर
- मैलाथियान 25 प्रतिशत डब्ल्यूपी, 3.7 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर
- डेल्टामैथरिन 2.8 प्रतिशत ईसी, 450 मिलीलीटर प्रति हेक्टेयर
- फिपरोनिल 5 प्रतिशत एससी, 125 मिलीलीटर प्रति हेक्टेयर
- फिपरोनिल 2.8 प्रतिशत ईसी, 225 मिलीलीटर प्रति हेक्टेयर
- लैम्डा-साइहैलोथ्रीन 5 प्रतिशत ईसी, 400 मिलीलीटर प्रति हेक्टेयर
- लैम्डा-साइहैलोथ्रीन 10 प्रतिशत डब्ल्यूपी, 200 ग्राम प्रति हेक्टेयर



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	22.05.2020	03	02-03

हकूमि के कीट विज्ञान विभाग ने टिड़ी दल से सुरक्षा के बारे दिए सतर्कतापूर्वक अत्यावश्यक सुझाव

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. केपी सिंह के कुशल व योग्य मार्गदर्शन ने कीट विज्ञान विभाग ने किसानों को टिड़ी दल से सुरक्षा सबधित महत्वपूर्ण सुझाव दिए। टिड़ियां छोटे एटिना गाली तथा प्रवासी आदत की होती हैं। ये टिड़ियां अफेले-2 या झुंड में रहती हैं तथा बहुमत्थी होती हैं। व्यस्क मादा टिड़ियां नमी युक्त रेतीली गिरियों में 10-15 सेमी. की गहराई पर समूह में आण्डे देती हैं। इन आण्डों से शिशु टिड़ियां सामान्यता 2 सप्ताह में निकल आती हैं। इस अवस्था में ये टिड़ियां सामान्यता 6 सप्ताह तक रहती हैं तथा आसपास गौजूद वनस्पतियों को नष्ट कर देती हैं। शिशु टिड़ियों के पंख नहीं होते अतः ये उड़ नहीं सकती। व्यस्क अपरिपक्व टिड़ियां गुलाबी रंग की तथा इनके पंख निकल आते हैं अतः ये दल या झुंड

बनाकर उड़ने में सक्षम होती है इस अवस्था में सामान्यता 4 सप्ताह तक रही है। झुंड में टिड़ियां हजारों से लेकर लाखों की संख्या तक हो सकती हैं। ये झुंड दिन के समय 12 से 16 किलोमीटर प्रति घण्टे की रफ्तार से 150 किलोमीटर तक की दूरी तय कर सकते हैं। ये झुंड रात के समय विगिज वनस्पतियों पर बैठ जाते हैं तथा अधिक से अधिक थति पहुंचाते हैं। इन टिड़ियों का दंग जब गहरा गूरा या पीला होने लगे तो ये परिपक्व व्यस्क बन जाती हैं जो आण्डे देने में सक्षम होती हैं। आण्डे देने की शिथि आने पर ये टिड़ियां 2-3 दिनों तक उड़ नहीं पाती। फसलों में थति की दृष्टि से इन टिड़ियों की संख्या 10000 टिड़िया प्रति हेक्टेयर या 5-6 टिड़ियां प्रति झाड़ी आंकी गई है। टिड़ियों की संख्या इससे अधिक होने पर कीटनाशक दवाइयों के छिकाव की जरूरत पड़ती है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	22.05.2020	03	01-03

हकूमि के कीट विज्ञान विभाग ने टिड़ी दल से सुरक्षा के बारे दिए सतर्कतापूर्वक अत्यावश्यक सुझाव

पाठकपक्ष न्यूज़

हिसार, 23 मई : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के.पी. सिंह के कुशल व योग्य मार्गदर्शन में कीट विज्ञान विभाग ने किसानों को टिड़ी दल से सुरक्षा संबंधित महत्वपूर्ण सुझाव दिए। टिड़ियां छोटे एंटिना वाली तथा प्रवासी आदत की होती हैं। ये टिड़ियां अकेले-2 या झुंड में रहती हैं तथा बहुभक्ती होती हैं। व्यस्क मादा टिड़ियां नमी युक्त रेतीली मिट्टियों में 10-15 सें.मी. की गहराई पर समूह में अण्डे देती हैं। इन अण्डों से शिशु टिड़ियां सामान्यता 2 सप्ताह में निकल आती हैं। इस अवस्था में ये टिड़ियां सामान्यता 6 सप्ताह तक रहती हैं तथा आसपास मौजूद बनस्पतियों को नष्ट कर देती हैं। शिशु टिड़ियों के पंख नहीं होते अतः ये उड़ नहीं सकती। व्यस्क अपरिपक्व टिड़ियां गुलाबी रंग की तथा इनके पख निकल आते हैं अतः ये दल या झुंड बनाकर उड़ने में सक्षम होती हैं इस अवस्था में सामान्यता 4 सप्ताह तक

रही है। झुंड में टिड़ियां हजारों से लोकर लाखों की संख्या तक हो सकती है। ये झुंड दिन के समय 12 से 16 किलोमीटर प्रति घण्टे की रफ्तार से 150 किलोमीटर तक की दूरी तय कर सकते हैं। ये झुंड रात के समय विभिन्न बनस्पतियों पर बैठ जाते हैं तथा अधिक से अधिक क्षति पहुंचाते हैं। इन टिड़ियों का रंग जब गहरा भूरा या पीला होने लगे तो ये परिपक्व व्यस्क बन जाती हैं जो अण्डे देने में सक्षम होती हैं। अण्डे देने की स्थिति आने पर ये टिड़ियां 2-3 दिनों तक उड़ नहीं पाती। फसलों में क्षति की दृष्टि से इन टिड़ियों की संख्या 10000 टिड़ियां प्रति हेक्टेयर या 5-6 टिड़ियां प्रति झाड़ी आंकी गई है। टिड़ियों की संख्या इससे अधिक होने पर कीटनाशक दवाइयों के छिड़काव की जरूरत पड़ती है। हमारे सीमावर्ती राज्य में इन टिड़ियों के झुंड पाये गये हैं तथा इनके नियंत्रण का कार्य लगातार किया जा रहा है। सीमावर्ती राज्य होने के नाते ही तो घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है। अनावश्यक कीटनाशकों का प्रयोग फसलों पर न करें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ऑनलाइन (यूनिक हरियाणा)	22.05.2020	---	---

H.A.U के कीट विज्ञान विभाग ने टिङ्गी दल से सुरक्षा के बारे दिए सतर्कतापूर्वक अत्यावश्यक सुझाव

May 22, 2020 • Rakesh • Haryana News

यूनिक हरियाणा हिसार: 22 मई

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. कै.पी. सिंह के कुशल व योग्य मार्गदर्शन में कीट विज्ञान विभाग ने किसानों को टिङ्गी दल से सुरक्षा संबंधित महत्वपूर्ण सुझाव दिए। टिङ्गियों द्वाटे एंटिना वाली तथा प्राप्तसी आदत की होती हैं। ये टिङ्गियां अकेले-2 या गुंड में रहती हैं तथा बहुभासी होती हैं। व्यस्तक मादा टिङ्गियों नमी युक्त रेतीली जिहियों में 10-15 सें.मी. की गहराई पर समूह में अपडे देती हैं। इन अण्डों से जिथु टिङ्गियों सामान्यता 2 सप्ताह में निकल आती हैं। इस अवस्था में ये टिङ्गियों सामान्यता 6 सप्ताह तक रहती हैं तथा आसपास भीजूद वनस्पतियों को नष्ट कर देती हैं। जिथु टिङ्गियों के पैख नहीं होते अतः ये उड़ नहीं सकती। व्यस्तक अपरिक्वच टिङ्गियों गुलाबी रंग की तथा इनके पैख निकल आते हैं अतः ये दल या गुंड बनाकर उड़ने में सक्षम होती हैं इस अवस्था में सामान्यता 4 सप्ताह तक रहती है। गुंड में टिङ्गियों हजारों से लेकर लाखों की संख्या तक हो सकती है। ये गुंड रात के समय विजिन वनस्पतियों पर बैठ जाते हैं तथा अधिक से अधिक क्षति पूँछते हैं। इन टिङ्गियों का रंग जब गहरा भूरा या पीला होने लगे तो ये परिपक्व व्यस्तक बन जाती हैं जो अपडे देने में सक्षम होती हैं। अपडे देने की स्थिति आने पर ये टिङ्गियों 2-3 दिनों तक उड़ नहीं पाती।

फसलों में क्षति की दिक्षि से इन टिङ्गियों की संख्या 10000 टिङ्गियां प्रति हेक्टेएर या 5-6 टिङ्गियां प्रति झाड़ी आंकी जाती है। टिङ्गियों की संख्या इससे अधिक होने पर कीटनाशक दवाइयों के छिकाव की जरूरत पड़ती है। हमारे सीमावर्ती राज्य में इन टिङ्गियों के गुंड पाये जाते हैं तथा इनके नियंत्रण का कार्य लगातार विज्ञा जा रहा है। सीमावर्ती राज्य होने के नाते हरियाणा के किसान आइयों (खासकर हिसार व सिरसा ज़िला के) को सतर्क रहने की आवश्यकता है। किसान आइयों को निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं।



1. हमारे राज्य में टिङ्गियों के गुंड के प्रवेश करने की संभावना कम है परन्तु सचेत रहकर आपसी सहयोग करें।
 2. टिङ्गियों के गुंड के दिखाएँ देने पर थोल या इम बनाकर इन्हें फसलों पर बैठने से रोका जा सकता है।
 3. टिङ्गियों की फसल में उपस्थिति या आसपास के इलाकों में प्रवेश की जानकारी नजदीकी कृषि विज्ञान केन्द्र या कृषि विभाग अधिकारी या कीट विज्ञान विभाग, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार को तुरन्त दी जाए।
 4. रेतीले टिङ्गियों / इलाकों में अगर टिङ्गियों के गुंड (पीले रंग की टिङ्गियों १) जमीन पर बैठी दिखाई दे तो उस स्थिति को चिन्हित कर तुरन्त सूचित करें।
 5. टिङ्गियों अगर गुंड में न होकर अलग-2 हैं तथा इनकी संख्या कम है तो घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है।
 6. अनावश्यक कीटनाशकों का प्रयोग फसलों पर न करें।
 7. सोशल मीडिया पर टिङ्गी दल के बारे में अनावश्यक खबरें न कलायें।
- एफ.ए.आर. दवावा टिङ्गी दल के नियंत्रण के लिए सिपाहियां किए गए कीटनाशक इस प्रकार हैं:
- कमांक कीटनाशक का नाम मात्रा प्रति हेक्टर
1. बलोरपायरिफास 20 प्रतिशत इ.सी. 1.2 लीटर
 2. बलोरपायरिफास 50 प्रतिशत इ.सी. 480 मिली लीटर
 3. मैलाधियान 50 प्रतिशत इ.सी. 1.86 लीटर
 4. मैलाधियान 25 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. 3.7 लिंगो याम
 5. डेलटामीथरिन 2.8 प्रतिशत इ.सी. 450 मिली लीटर
 6. फिपरोनिल 5 प्रतिशत एस.सी. 125 मिली लीटर
 7. फिपरोनिल 2.8 प्रतिशत इ.सी. 225 मिली लीटर
 8. जैन्डा-साइड्हेलोथीन 5 प्रतिशत इ.सी. 400 मिली लीटर
 9. जैन्डा-साइड्हेलोथीन 10 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. 200 याम